RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-12
December -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

आनंद देव के कलाकार्य और प्रयोग

मंजू ; प्रो डॉ सुषमा सिंह

शोध छात्रा, दृश्य कला विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
शोध निर्देशिका, प्रोफेसर, दृश्य कला विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

श्री आनंद देव चित्रकला के क्षेत्र में जानी मानी हस्ती हैं। इनके चित्रों की प्रदर्शनी भारत के अलावा विदेशों में भी लगाई गई है अनेक पुरूष्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।[1] श्री आनंद देव समकालीन कला के विशिष्ट कलाकारों में से एक हैं। उन्होनें अपनी अभिव्यक्ति के लिए कला के माध्यमों को चुना। आनंद आधुनिक कला जगत में चार्चित एवं प्रसिद्ध है। आधुनिक कला प्रयोग में प्रभाववाद से अत्यधिक प्रभावित होकर उन्होनें चित्र बनायें एवम् देश–विदेश में अनेकों चित्र प्रदर्शनियॉ लगाई, जिनमें दिल्ली, मुम्बई, बंगलोर, क्यूबा ;हवानाद्ध पेरिस, स्पेन ;माडरिडद्ध टर्की ;अंकाराद्ध व बंगलादेश ;ठाकाद्ध में प्रदर्शनियॉ कर चुके है।[2]

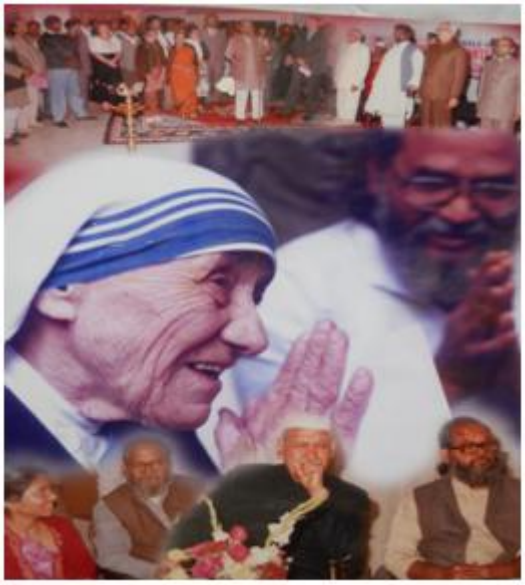

आनंद देव के वंशज मूलतः हरियाणा के हैं लेकिन इनका जन्म 1933 ई0 में दिल्ली में हुआ, जहां इसके पिता आकर बस गए थे।[3] उनके पिता प0 सुरज भान तथा माता जमना देवी ने बड़े लाड–चाव से पाला यह भी सौभाग्य की बात थी कि उनका घर जमना नदी के किनारे पर था तथा उनके माता–पिता नित जमना स्नान के लिए जाते थे उन्हीं से उन्होने तैरने की शिक्षा प्राप्त की तथा अपनी माता से ही कला की शिक्षा प्राप्त हुई। हर पर्व पर वे अपने घर को अल्पनाओं से सजाती थी जिसमें उनका भी सहयोग उनकी कला रूची में सहभागी बना। इनकी माता एक कुशल गृहणी थी, साथ ही वह खुःश मिजाज व मिलनसार थी ठीक उसी प्रकार आनंद देव जी का स्वभाव अपने माता–पिता की तरह है। भारतीय आधुनिक चित्रकला में आनंद देव का नाम उनकी कला साधना के लिए सदैव उल्लेखनीय रहेगा आनंद देव जी समकालीन कला जगत का बहुत आदरणीय नाम है जो हरियाणा प्रदेश में जन्में बहुमुखी प्रतिभावान कलाकारों में से एक है।कलाओं में उनकी रचनात्मकता अनेक प्रकार के रूप धारण करती है, जिसके फलस्वरूप विविध प्रकार की कलाकृतियॉ जन्म लेती हैं।[4]

साइनबोर्ड पेंटर से लेकर भारत भ्रमण की यात्रा तक– जमना नदी के किनारे पर बसी बेलारोड़ बस्ती में अधिकतर ट्रांस्पोर्टर रहते थे। उनकी बसों और ट्रकों के दरवाजों को चित्रित कर उन्होने आठवीं कक्षा पास करने तक अपने परिवार की आय में वृद्धि करना प्रारम्भ कर दिया था। जब भी पाठशाला या आर्ट स्कूल में लम्बी छुट्टियॉ आती वो अपने थेले में तूलिका व रंग लेकर अन्य नगरों में भ्रमण के लिए निकल जाते और वहां भी अपनी रचनाओं को बेच कर धन अर्जन करने से नहीं चूकते थे।

छोटी आयु में ही उन्होनें उतरी भारत का भ्रमण कर डाला था। दक्षिण व पश्चिम का भ्रमण उन्होनें आर्ट स्कूल के विद्यार्थी होते हुए किया।

कला मेले का आयोजन :– ललित कला अकादमी नई दिल्ली को ''कला मेला'' आयोजन का प्रारूप देना उनके मस्तिष्क की उपज है। अपने अकादमी के 20 वर्ष के अंतराल में वे कार्यकारी परिषद के सदस्य से लेकर उपाध्यक्ष व अध्यक्ष के पदों को सम्मानित करते रहे। यह अंतराल 1974 से 1994 तक का है। उनके होते हुए लखनउ, चेन्नई, कलकता व भूवनेश्वर में रजिनल कला संस्थान की स्थापना हुई और उसके पश्चात रजिनल कला संस्थान नहीं बन पाये। उनका कला के प्रति योगदान अतुल्य है। घोर विरोधों

RRIJM 2015, All Rights Reserved

व आर्थिक संकट में भी स्वाभीमान का प्रतिक उनकी तनी हुई रीढ़ को झुका नहीं सका।

पेंटिंग–नारी का आदर्श रूप धर्मानुगत जैनकला में यद्यपि नारी–रूपों का चित्रण एक निश्चित सीमा में हुआ। नारी–चित्रण के क्षेत्र में तीर्थकारों की अधिषणत्री देवियॉ अम्बिका, पद्‌मावती, सरस्वती, षासन, चक्रेश्वरी और सोलह विद्यादेवियॉ प्रमुख है। इन देवी चित्रों में उज्ज्वल घूम–वर्ण, लौकशैली की अल्हड़ता, वस्त्रसज्जा और हस्त–मुद्राऍ, रंगों में कलात्मक श्रंगार तथा माधुर्य ओतःप्रोत है।[5] चित्र में रंग–योजना की दृष्टि से, देखा जा सकता है। पृष्ठभूमि में हरे, पीले व काले रंग का प्रयोग किया गया है। और आनुसंगिक रूप से बदली, पीत, श्वेत तथा नीले रंगों का भी समावेश किया गया है। रेखाओं का सबसे बड़ा उद्‌देश्य होता है भावों को व्यक्त करना। भारतीय कला में अश्व को शक्ति एवं स्फूर्ति का प्रतीक माना गया इसका सम्बन्ध प्राचीन भारतीय धर्म में विभिन्न देवताओं से था। यह धन देने वाला तथा सौभाग्य को बढ़ाने वाला है।[5] अश्व को संसार धारण करने वाला तथा नियन्ता कहा गया है जो देवताओं और प्रजापति के निमित्त रूप ही गमन करते है[6] ब्राहाण ग्रन्थों में भी अश्व का विवरण मिलता है। तैतिरीय ब्राहाण में इसको 'अप्सुयोंनिर्वा अश्वः' कहा गया है।[7] शतपथ में इसे 'वज्रो वा अश्वः' कहा गया है।[8] अश्व मनुष्यों का ही नहीं अपितु देव, दानव, गन्धर्वो आदि से भी सम्बंधित पशु कहा गया है।[9] जो कि समुंद्र का बन्धु है तथा समुंद्र ही अश्व की योनि कही गयी है।[10] कौषितकी ब्राहाण में इसको इन्द्र से सम्बन्धित कहा गया है।[11] वृहदारण्यक में यज्ञाश्व को 'समुंद्र एवास्था बन्धु समुंद्रों योनिः' कहा गया है। अश्व का सिर उषा, नेत सूर्य है। संवत्सर आत्मा है।[12] चित्रकार ने चित्रों को जीवन्त करके हमारे मन पर उनके अमिट छाप छोड़ी है।[13] कीट्‌स के शब्दों में सुन्दरता की वस्तु सदैव आनन्ददायिनी है। इसी प्रकार प्रत्येक कला की कृति से भी अपार आनन्द प्राप्त होता है। क्योंकि कला जीवन के किसी पक्ष का चित्र उपस्थित करती है।[14]

हरियाणा की लोककला का प्रभाव मेरा जन्म भी हरियाणा के बेरी ग्राम में हुआ मेरे परिवार में कोई भी कलाकार नहीं था, ऐसा मैं नहीं मानता। मुझे सबसे पहले कलाकार के रूप में मेरी माता ने अधिक प्रभावित किया। वे रूमालों को चादरों को बन्दखाटों, दिवारों को अपनी कढ़ाई, कलकारिता के माध्यम से हर पर्व पर सजाती थी उनकी कढ़ाई की कलाकारी की रंग बिरंगी बनावटों ने मुझे प्रभावित किया। गेंरू, खड़िया के सीधे प्रयोग से उन्होनें होली, दिवाली देव उठनी ग्यायस पर घर की दीवारों को फरश को स्वश अपने हाथ से लीप कर सुन्दर आकृतियों से निरन्तर सजाया। रंगबिरंगे कागजों की फुलझड़ी बनानी उन्हें आती थी। अपनी रसोई के किसी कौने को वे चमकीले शीशे, रंगबिरंगी चूड़ियों व अन्य सुन्दर प्रयोग में न आने वाली वस्तुओं को एक दूसरे के समीप चिपकाकर उन्होनें सजाया। गाय, बैलों के लिए मोर पंखी व कौड़ियों से जड़ा मुक्ट बनाना उन्हें आता था। उनके शरीर को ढकनें के लिए व रंग बिरंगी कतरनों को फूल–पतियों के रूप में काटकर सीना–पिरोना उन्हें आता। बड़े–बड़े मोतियों व घुंघरूओं की झालर बनाकर वे खिड़कियों को सजाती थी। हवा के प्रवाह से हिलकर वे संगीत में वे झालरें धुन व ताल प्रसारित करती थी आए बाए मैं अपने भाई बहनों के साथ उस धुन–ताल पर नाच उठते थे। अथवा कला के साथ संगीत का माहौल घर में निरन्तर बना रहता था। बाजरा कूटने व अनाज का झाडने–पिछोड़ने के समय मेरी माता के कण्ठ से गीत झरने के समान फूट पड़ता था। सन की सुतलियों को भिन्न–2 रंगों में रंग तरह–2 के डिजाइनों में सजाना उन्हें आता था। सांझी बनाने में व गोवर्धन की आकृति गोबर से बना कर अपनी महारत का प्रदर्शन वे हर वर्ष करती थी। यह मेरी ही नहीं अन्य लोगों का सौभाग्य था कि अनको ऐसी हरियाणा की माताऐं शिक्षक के रूप में मिली। जो कलाकार, संगीतकार व सफल शिल्पकार भी थी और आज भी हैं, जिसने उनकी कदर की, आदर किया वे कलाकार, शिल्पकार व लखमीचंद के समान रागनी रच कर व गाकर पसिद्ध हो गए। जिसने कुछ बनना होता है वह किसी प्रकार की सहायता या बैसाखी का आधीन नहीं होता।

डायरेक्ट :– राष्ट्रीय कलामेला, त्रीवावीकी; अंतराष्ट्रीय कला प्रर्दशनी सदस्य हिन्दी सम्मति :– ललित कला अकादमी नई दिल्लीद्ध अनूठी खोज :– भारत वर्ष की स्वतंत्रता की चालिसवीं वष गांठ पर उन रेखाकनों, चित्रों व लिखित सामग्री की खोज जिनको अंग्रेजी सरकार ने अपने शासन काल में जब्त कर लिया था ललित कला अकादमी नई दिल्ली। सदस्य बोर्ड ऑफ स्टडीन :– वास्तुकला विद्यालय चण्ड़ीगढ़, बनारस हिन्दु विश्व विद्यालय वाराणसी। चयन समितियों का सदस्य :– राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी, अंतराष्ट्रीय कला प्रदर्शनी त्रीवार्षिकी ललित कला अकादमी नई दिल्ली, ललित कला अकादमी अमृतसर, रायपुर लखनउ, पटना, श्रीनगर, चण्ड़ीगढ़ व जयपुर। प्रकाशित कहानियॉ :–कविताएं व गजल :– कब्र का पत्थर, रंगीन तोते, मिश्री, माँ, दिवाली के बाद। स्मारिका :– का पथम स्वतंत्रता संग्राम मेरठ विवक्ता जमीन–साहित्य कला परिषद दिल्ली।[15] कहानियॉ :– आनन्द देव के समकालीन कलाकारों में कुछ ही बिरले कलाकार थे जिन्होनें इस विद्‌या में अपनी रूची दिखाई हो। हो सकता है कि बहुत से कलाकार गद्य–पद्य लिखने के शौकिन हों परन्तु समाज के समक्ष उजागर न हो पाए हों। इस विषय पर तथा उन कलाकारों की रंग–बिरंगी रूची की खोज महत्वपूर्ण योगदान करने के लिए प्रसन्नता का पग बनाने में सहायक होती है। वैसे सुजा, हुसैन, रामकुमार, जे स्वामीनाथन आदि नामों से कलाजगत परिचित है जिन के लेख कविताएं कहानियॉ भी प्रसिद्ध हुई। आनन्द देव के वैचारित, समीक्षात्मक, पद्यों, गद्यों के लेखन व डायरी अशों का प्रकाशन समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में जब–तब हुआ तथा उससे कलाकारों व लेखकों का ध्यान आकृष्ट हुआ। सम्यक आकलन के लिए उनके सम्पूर्ण गद्य–पद्य का संकलन प्रकाशित होना अनिवार्य है। आनन्द देव के लेखन के महत्व

RRIJM 2015, All Rights Reserved

से उनके मित्र लेखक व कलाकार परिचित हैं। किसी कलाकार के मूल्यांकन में उसकी लेखन रूची की भूमिका प्रायः महत्व की साबित होती है।

प्रकाश्ति कहानियों में कविताएं व गजल कब्र का पत्थर, रंगीन तोते, मिश्री, माँ, दिवाली के बाद आदि कहानियाँ हैं। हमारे लोक कलाकारों की गायन, नृत्य व कला में रूची तो उनकी प्रतिदिन की दिन चर्चा से प्रारम्भ हो जाती थी। वे अपने कच्चे घरों को गरा–गोबर के घोल से लीप कर बहू आयामी चित्रों के संसार के खोजी लेखकों के लिए एक बड़े भारी भण्ड़ार के रूप में छोड गये जिन्होनें उनके कार्यकलापों पर पुस्तकें लिख कर अपने रोजगार व व्यापार का साधन बनाया। आनन्द देव की कहानी को समान रूप से साधने वाले समर्थ लोगों में से है। उनके लेखन में उर्दू शब्दों की भरमार साफ दिखाई देती है। इसी लिए उनकी कला को देखकर आखों द्वारा भी भुरभूरी गजक का रसास्वादन लिया जा सकता है। यह देखना दर्शक के लिए अपने अनोखे अन्दाज के समान चमत्कारिक होता है। यह अन्दाज उनके चित्रों की विशिष्ठता को प्रकट करता है। उनकी एक गजल की पंक्ति से श्रोता इस अन्दाजेबयानी को सफल समझ सकता है –

'' है रंगों से दोस्ती किसी गैर से नहीं,
मिली रूहानी रोशनी कोई कमी नहीं।
इस दोस्ती का रंग–रंग–ए वफा है,
रंग–ए–दगा दोस्ती पर बिल्कुल पड़ा नहीं।''

आनन्द देव की कविताओं और कहानियों को पढ़कर इन्द्र धनुषीय आभास होने लगता है और वे रचनाएं भी चित्रों के समान बहुरंगी पुष्पों का धारण करती है। आनन्द देव के लेखन में चित्र चरित्र, घटना या वर्णन का विस्तार मिलता है– उन पर अगर ध्यान केन्द्रित करे तो अपने अन्दाज में बेहद सरल लगते है। लेकिन वे सरल होते नहीं हैं। उनके भीतर सहज प्रवाह की गति और अर्थ–गुकन की जटिलताएँ मौजूद होती है। [15]

आनन्द देव का गद्य एक चित्रकार का गद्य ज्यादा लगता है। उनकी कहानियों में कवित्व की झलक भी साफ दिखाई देती है वहां उनका चित्रकार लेखनी नहीं वरण तूलिका को रंगों में डूबो कर कविताएं व कहानियाँ लिखता है।उनकी कहानी '' रंगीन तोते'' इस सत्यता को सही रूप में उजागर करती है। ''कब्र का पत्थर'' भी दो कलाकार मित्रों के दर्द व संवेदना के रंगों से रंगी हुई कहानी है। कहानी ''माँ'' तो नारी जाति पर अत्याचार व उत्पीड़न से ग्रसित उस महिला की कहानी है जो अपने परिश्रम अपने उपर लगी कालिख को धोकर अपने बेटा–बेटियों को रंगीन वस्त्र पहना कर अपनी जीवन यात्रा में रंग भरने का सफल प्रयास कर धन्य हो जाती है। ''मिश्री'' कहानी में सच्चाई व स्वाभीमान का रंग जगमग करता नजर आता है। कहानी ''दीवाली'' के बाद'' मैं एक वृद्ध जिसने अन्जान बालकों को मां के समान पाला पोसा था उनके चले जाने के पश्चात नेत्र से टपकें आसुओं के रंग से अपने हद्य को सांत्वना देती–देती नहीं थकती। कितने रंग उनकी कहानियों में है उनकी सर्म्पण कर तो रंग सुहावने बेशक न लगे परन्तु जीवन में लगे जखमों की गहराईयों का उपचार करने के लिए मरहम का काम अवश्य करते हैं।

यहां कलाकार कवि रंगों को औषधी का दर्जा देकर दुख निवारण का साधन बनाता है। यही साधन बनाना कवि कलाकार की साधना की उर्जा है। इस समय उनकी अनुभूति प्रकिया एक संवेदनशील कलाकार का रूप धारण कर लेती है। अनुभूति या संवेदना में जो कला–भाव हो, भाषा के स्तर पर वह रंग–बिरंगें शब्दों की सरिता में स्नान करके सात्विक रूप धारण कर लेता है। यहां गद्य व पद्य के कला के तालमेल से सांस्कृतिक गरिमा बढ़ती है।

उनकी कहानियाँ, आदमी और जीवन के 'सच' की कहानी है। वे ऐसे कलाकार है जो संसार में एक पके घड़े में ठण्ड़े पानी के समान पाठकों की पिपासा को तृप्त करती है। जिससे की वह अपनी मानसिक थकान को मिटाता हुआ देखकर जीवन के दुखद व सुखद रंगों से परिचित हो सकें और घबराएं न जब तक वह प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1 पत्रिका–आज, षनिवार 17 फरवरी, सौर 5 फाल्गुन पृश्ठ स0 10

2 Greenmark ART Gallery 2nd A/SA] 101] Ground Floor, Sector-2. Vaishali, Ghaziabad, Mobile 9810283862 Vaishali-East of Delihi Ghaziabad.

2 समकालीन कला, ललित कला अकादमी की पत्रिका नवम्बर 1987/मई 1988 अंक 9–10 प्रकाशन अधिकारी, प्रकासित और न्यूटेक फोटोलिथोग्राफी झिलमिल ताहिरपुर, शाहदरा, दिल्ली 110032 से मुद्रित पृष्ट स. 22–28.

3 डॉ0 श्यामला गुप्ता, सौन्दर्य तत्वमीमांसा, सीमा साहित्य भवन प्रकाशक एवं वितरक 283–जी, न्यू लायलपुर, दिल्ली–110051, पृष्ट स. 118

4 भारतीय चित्रकला, वाचस्पति गैरोला, प्रकाशक, मित्र प्रकाशन प्रा0 लिमिटेड, इलाहाबाद पृ0 संख्या 141.

5 यजुर्वेद–संस्कृति संस्थान बरेली, प्रथम संस्करण 19601 पृ. संख्या 2,11.

6 वही पृ0–2,22

7 तैतिरीय, ब्राहाण, 3,4,4,3. आर0 शामशास्त्रीय ;सं0द्ध, मैसूर, 1921.

8 शतपथ, ब्राहाण 4,34,27;सं0) , 0 बेवर, लिपसिंग, 1924.

9 शतपथ, ब्राहाण, 10,6,41. ''

10 कौषतिकी ब्राहाण 15,4

11 वृहदारण्यक उपनिषद 2,1–2 सायण भाष्य महित, गील प्रेस, गोरखपुर, तृतीया संस्करण स0 2014

12 साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी आंनद देव

13 शुकदेव श्रोत्रिय, कला बोध एवं सौन्दर्य, प्रकाशन, आदर्शनगर, भोपा रोड़ मुजफ्फरनगर, (उ0 प्र0), 251001 पृ0 संख्या 21

14 डा0 चिरंजी लाल झा, कला के दार्शनिक तत्व, प्रकाशन और व्यवस्थापक, लक्ष्मी कला कुटीर कला पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता नयागंज, गाजियाबाद पृ0 संख्या 5.

15 साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी आंनद देव

RRIJM 2015, All Rights Reserved